jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:15 PM Page 32

सिंह ने 26 जुलाई 1979 को इंदिरा गांधी के समर्थन से सरकार बना ली। 15 अगस्त को लालकिले से भाषण में उन्होंने कहा कि वे नए चुनाव के पक्ष में नहीं हैं। पर ठीक 5 दिन बाद उन्होंने राष्ट्रपति को लोकसभा भंग कर करके ताजे चुनाव कराने की प्रार्थना भेज दी, उसी दिन 11.15 बजे चंद्रशेखर और जगजीवन राम ने राष्ट्रपति से मिलकर बहुमत का दावा किया और अपने समर्थकों की सूची पेश करने की इच्छा प्रकट की तो राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे कोई जल्दी नहीं है। आप अपनी सूची कल भी पेश कर सकते हैं। पर उसके ठीक आधे घंटे बाद उन्होंने लोक सभा को भंग कर दिया।

नानाजी बुरी तरह आहत थे कि प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति जैसे उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति इतना सफेद झूठ बोल कर राष्ट्र को धोखा दे सकते हैं। 14 अगस्त 1979 को उन्होंने चरण सिंह को एक बहुत लम्बा पत्र लिखा। इस पत्र में नानाजी ने तिथि अनुसार उनकी सत्तालिप्सा, अवसरवाद, परस्परविरोधी और असत्य कथनी के तथ्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया। यह पत्र भारत की राजनीतिक संस्कृति के पतन पर प्रकाश डालने वाला एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। उसी पत्र में नानाजी ने लिखा कि "मैं राजनीति में अपने लिए नहीं, राष्ट्रहित के लिए हूँ।"

केवल 24 दिन बाद ही इंदिरा गांधी ने चरण सिंह के पांवों के नीचे से प्रधानमंत्री की कुर्सी खिसका ली और जनता पार्टी सरकार का प्रयोग धराशायी हो गया। अपनी आँखों के सामने दलविहीन लोकतंत्र के अपने स्वप्न का दल और वोट की राजनीति द्वारा अपहरण और हत्या होते देखकर भग्नहृदय जे.पी. 8 अक्टूबर 1979 को महाप्रयाण कर गए। नानाजी का दम भी राजनीति में घुटने लगा था, वे उससे बाहर निकलने के लिए व्याकुल थे। किन्तु चंद्रशेखर और मित्रों के आग्रह और जनता पार्टी व उसकी सरकार के पतन को रोकने के लिए वे प्रयासरत रहे। अक्टूबर 1979 में उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी में 'आर.एस.एस. : विक्टिम ऑफ स्लैण्डर' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित की। यह पुस्तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनसंघ की रचनात्मक भूमिका, संपूर्ण क्रांति आंदोलन और जनता पार्टी की अन्तर्कलह पर एक प्रामाणिक समकालीन दस्तावेज है। जनता पार्टी के विघटन और जे.पी. के निधन से व्यथित नानाजी ने दल और वोट की सत्ता-राजनीति से पूरी तरह मुंह मोड़ लिया।

नानाजी का यह विश्वास उत्तरोत्तर दृढ़ होता जा रहा था कि वर्तमान राजनीतिक प्रणाली

परफेक्शनिस्ट नानाजी किसी भी काम में स्वयं बारीकी से रुचि लेते थे

के भीतर लोकशक्ति का जागरण और सर्वांगीण विकास असंभव है। वे जनसहभाग के द्वारा विकास का रचनात्मक प्रयोग करने को व्याकुल हो उठे। उसके लिए राजनीति से छुटकारा पाना आवश्यक था। इस दिशा में पहले कदम के रूप में उन्होंने 20 अप्रैल 1978 को एक वक्तव्य में 60 वर्ष से अधिक आयु के अनुभवी राजनीतिज्ञों को सत्ता से अलग होकर रचनात्मक कार्य का उदाहरण प्रस्तुत करने का आग्रह किया। सत्तारूढ़ दल के महामंत्री की ओर से आने वाला यह वक्तव्य बहुत अधिक चर्चित रहा। किसी ने उनकी सलाह को नहीं सुना पर नानाजी अपना पथ निश्चित कर चुके थे। 8 अक्टूबर 1978 को उन्होंने पटना में लोकनायक जयप्रकाश की उपस्थिति में उन्होंने एक लम्बा ऐतिहासिक वक्तव्य देकर सत्ता-राजनीति से अपने सन्यास की घोषणा कर दी। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अब वे कोई चुनाव नहीं लड़ेंगे और पूरा समय अराजनीतिक रचनात्मक कार्य को समर्पित करेंगे। तब नानाजी अपनी आयु के 62 वर्ष पूरे कर रहे थे। संगठनात्मक और राजनीतिक कार्य का 38 वर्ष का लम्बा अनुभव उनके पास था। वे अपनी लोकप्रियता और प्रभाव के शिखर पर थे। देश के सभी शीर्ष राजनेताओं, पत्रकारों, समाजसेवकों एवं उद्योगपतियों से उनका अनौपचारिक निकट संबंध बन गया था। अद्भुत कल्पनाशक्ति, संगठन-कुशलता व योजकता और साधन-संग्रहक की पूंजी लेकर वे रचनात्मक क्षेत्र में कूद पड़े।

इस सार्वजनिक घोषणा के पहले ही वे सर्वांगीण विकास के रचनात्मक प्रयोग की दिशा में कदम उठा चुके थे। गोंडा जिले